

दर्शन के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा:

दर्शनस्तंभों में एक महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि दर्शनके बिना लोग नष्ट हो जाते हैं। अगुवाओं के रूप में, परमेश्वर हमें अपने आह्वान के लिए एक दर्शनदेता है और उसने हमें राजकीय के लिए क्या करने के लिए कहा है। लेकिन दर्शनहमेशा अपने साथ कम से कम एक चुनौती लाती है। और यही प्रावधान की चुनौती है।

इस दर्शनके साथ आगे बढ़ने के लिए मुझे जो चाहिए वह परमेश्वर कैसे प्रदान करेंगे? ऐसा अक्सर लगता है कि सेवकाई में जरूरतें हमेशा दर्शनसे अधिक होती हैं। जरूरतें हमेशा बहुत चुनौतीपूर्ण होती हैं।

आप में से कुछ जो अभी इसे देख रहे हैं, उनकी बहुत स्पष्ट, विशिष्ट आवश्यकताएँ हैं। दर्शनको पूरा करने के लिए आपको धन, संसाधन, लोगों की आवश्यकता होती है। इस सत्र में हम परमेश्वर के प्रावधान को देखने जा रहे हैं।

मैं आपके दृष्टिकोण को थोड़ा बदलने की कोशिश करने जा रहा हूँ जैसा कि बाइबल मूसा के उदाहरण का उपयोग करके सिखाती है। आप और मैं बहुत हद तक मूसा जैसे थे। मूसा वह युवक था जिसके पास एक दर्शनथी कि परमेश्वर कैसे इस्राएलियों को मुक्त करने के लिए उसका उपयोग कर सकता है। यही उनका विचार था। और उनके पास वास्तव में यह समृद्ध जीवन था। और प्रबन्ध पर परमेश्वर की शिक्षा को समझने के लिए, हमें मूसा के जीवन को उसकी पहचान से समझना होगा, जो हमें इब्रानियों 11 में दी गई है। तो मैं आपको मूसा का वर्णन करने देता हूँ क्योंकि कुछ मायनों में मैं आपको एक दूरदर्शी अगुवा के रूप में वर्णित कर रहा हूँ जिसे परमेश्वर के प्रावधान की आवश्यकता है। मूसा का वर्णन 11.23 में शुरू होता है। "विश्वास से मूसा के माता-पिता ने उसके जन्म के बाद उसे तीन महीने तक छिपा रखा क्योंकि उन्होंने देखा कि वह कोई साधारण बच्चा नहीं था, और वे राजा के आदेश से डरते नहीं थे।

सेवकाई सुरक्षित नहीं है। मूसा सुरक्षित नहीं था। जब आप और मैं सेवकाई में जाते हैं और परमेश्वर हमें एक दर्शनदेते हैं, तो एक उपाय होता है जहाँ यह सुरक्षित नहीं है। अत्यधिक सार्थक, लेकिन बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं। और हमें यह समझना होगा कि जब हम कई बार परमेश्वर के प्रावधान के बारे में सोचते हैं तो हम सोचते हैं, "हे परमेश्वर मुझे इस तरह से प्रदान करें जिससे चीजें आरामदायक हों।" और शुरू से ही, मूसा का जीवन कभी भी आरामदायक नहीं था। आयत 24 को देखिए। "विश्वास से मूसा ने बड़े होने पर फिरौन की बेटी के पुत्र के रूप में जाने जाने से इनकार कर दिया।

मूसा ने स्थिति को अस्वीकार कर दिया। वे परमेश्वर के साथ दर्जा चाहते थे, लेकिन उन्हें मनुष्य के साथ दर्जा की आवश्यकता नहीं थी। अक्सर जब हम परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए दर्शन के प्रावधान के बारे में सोचते हैं, तो हम सोचते हैं, "अगर मुझे कुछ लोगों के साथ यह दर्जा मिलता, अगर मेरे पास प्रभाव का एक निश्चित स्थान होता, तो मुझे अधिक लोग या उससे भी अधिक धन प्राप्त करने की अनुमति मिलती, और मुझे उस स्थिति की आवश्यकता होती।" लेकिन मूसा का वर्णन था कि उनका अन्य व्यक्तियों के साथ कोई दर्जा नहीं था।

परमेश्वर को जो कुछ देने की जरूरत थी, उसके लिए परमेश्वर की हैसियत ही काफ़ी थी। आयत 25 को देखें। "उन्होंने पाप के क्षणभंगुर सुखों का आनंद लेने के बजाय परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार करना चुना।" मूसा के साथ दुर्व्यवहार किया गया और उसके साथ इस तरह से दुर्व्यवहार किया गया जो उचित नहीं था। जब आप अपनी दर्शनको पूरा करते हैं, तो आपके साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा, और कभी-कभी यह उचित नहीं लगेगा, और यह प्रावधान के क्षेत्र में उचित नहीं लगेगा।

और आप अनुग्रह, और परमेश्वर की भलाई और परमेश्वर की कृपा पर भरोसा करते हैं। लेकिन आप अपनी तुलना दूसरों से नहीं कर सकते और ऐसा महसूस नहीं कर सकते, "ठीक है, यह उचित नहीं है। उन्हें यह पैसा मिला और मुझे यह पैसा नहीं मिला। जब तक आप इस विशेषता को नहीं समझते कि कभी-कभी आपके साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा, तब तक आप कभी भी इस बात में कदम नहीं रखेंगे कि परमेश्वर आपको कैसे प्रदान करना चाहते हैं, लेकिन यही वह जगह है जहाँ आप परमेश्वर की कृपा पर भरोसा करते हैं। आयत 26 को देखें।

"मूसा ने मिस्र के खजाने की तुलना में मसीह के लिए अपमान को अधिक मूल्यवान माना क्योंकि वह अपने इनाम की प्रतीक्षा कर रहा था।

मूसा जानता था कि चुनौतियाँ होंगी। वह जानता था कि वह वहाँ होगा। लेकिन कुछ मायनों में, उन चुनौतियों को उन्होंने यह देखने के लिए विशाल अवसरों के रूप में देखा कि परमेश्वर क्या कर सकता है। अक्सर, हम केवल प्राकृतिक रूप में देखते हैं। हम मिस्र के खजाने देखते हैं। अगर हम आर्थिक रूप से इस संसाधन का दोहन कर सकते हैं या इस साझेदारी में दोहन कर सकते हैं। और हम प्राकृतिक रूप से देखते हैं। मूसा के पास विश्वास से यह जानने की क्षमता थी, "मैं चुनौतियों का सामना करने जा रहा हूँ, लेकिन मुझे मसीह के साथ एक बड़ा इनाम मिलेगा क्योंकि मैं इस बात पर निर्भर करता हूँ कि मसीह मुझे कैसे प्रदान करेगा।" आयत 27 को देखिए। "विश्वास से, मूसा ने मिस्र छोड़ दिया। राजा के क्रोध से न डरते हुए, वह दृढ़ रहा क्योंकि उसने उसे देखा जो अदृश्य है।

जब मूसा ने मिस्र छोड़ा, तो उसे नहीं पता था कि क्या होने वाला है। एक रहस्य था, लेकिन उसे कोई डर नहीं था।

मैंने कई युवा अगुवाओं के लिए विशेष रूप से पाया, जब यह परमेश्वर के प्रदान करने की बात आती है ताकि हम उनकी दर्शनको पूरा कर सकें, तो भय का यह काला बादल है जो हमारे ऊपर मंडरा सकता है। मूसा ने दृढ़ता दिखाई, जो इसके लिए आवश्यक है। उनके पास यह शक्ति थी क्योंकि उनका संबंध अदृश्य परमेश्वर से था, और फिर भी उनकी निर्भरता इसी पर थी। क्या आप देखते हैं कि मूसा की यह विशेषता क्या कर रही है? यह हमें पहचान के एक अलग क्षेत्र में स्थापित कर रहा है ताकि हम दुनिया के देखने के तरीके में चूक न करें कि हम उन संसाधनों को कैसे प्राप्त कर सकते हैं जिनकी हमें परमेश्वर ने हमें करने के लिए बुलाया है। रोमियों 12 में पौलुस ने कहा, "इस संसार के प्रतिरूप के अनुरूप मत बनो।

जब समाज संसाधन प्रावधान के बारे में बात करता है तो उस तरह से न सोचें, बल्कि अपने दिमाग के नवीनीकरण से बदल जाएं। परमेश्वर के पास खुद को स्थापित करने का एक अलग तरीका है जहाँ वह आपकी दर्शनके लिए प्रदान करेगा। इब्रानियों 11 की आयत 28 में इस दूसरी विशेषता को देखें। "विश्वास के द्वारा मूसा ने फसह और उसके रक्त का पालन किया, ताकि जेठा का नाश करनेवाला झंझार के जेठे को न छुए। उस पल की कल्पना करने की कोशिश करें। यह डरावना होना चाहिए था। एक बलिदान है, दरवाजे की चौखटों पर खून है,

जब आप सेवकाई में होते हैं, तो कुछ डरावने क्षण आते हैं। यह समझना मुश्किल है कि क्या हो रहा है। और अक्सर वे डरावने क्षण तब होते हैं जब हमें संसाधनों की आवश्यकता होती है जो परमेश्वर ने हमें करने के लिए कहा है और हम नहीं जानते कि यह कैसे होने वाला है। और मूसा ने परमेश्वर का आदर करना जारी रखा। वह उस योजना के प्रति सच्चे रहे जो परमेश्वर ने दी थी, यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर सफल होंगे।

हमारे पास विश्वास की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह है कि हम उस योजना के प्रति सच्चे रहें जो परमेश्वर ने दी है, यह विश्वास करते हुए कि वह सफल होगा। यहां तक कि जब यह डरावना होता है, तब भी जब हम इस बात की बात करते हैं कि हम परमेश्वर के प्रावधान को कैसे देखते हैं और समझते हैं, तो हम बदल जाते हैं।

इब्रानियों 11 की आयत 29 में अंतिम विशेषता को देखें। "विश्वास से लोग सूखी भूमि की तरह लाल सागर से गुजरे, लेकिन जब मिस्र के लोगों ने ऐसा करने की कोशिश की, तो वे डूब गए। मूसा ने परमेश्वर के अलौकिक प्रावधान को देखा। उसने देखा कि क्या होने वाला है।

मिस्रवासी, वे डूब गए थे, लेकिन इस्राएलियों को परमेश्वर ने स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया था।

और परमेश्वर ने मूसा के लिए वह सब कुछ प्रदान किया जिसकी मूसा को उसकी दर्शनको पूरा करने के लिए आवश्यकता थी। उन्होंने इसे आवश्यक रूप से उस तरह से प्रदान नहीं किया जिस तरह से मूसा ने सोचा था कि इसे प्रदान किया जाएगा या इसे कब प्रदान किया जाएगा। क्या आप देखते हैं कि हम मूसा की तरह कैसे हैं? हम उसी स्थिति में हैं जहाँ हमारे पास यह दर्शन है और हम इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं, लेकिन हमें उस दर्शनके लिए संसाधनों की आवश्यकता है। ईश्वर कैसे प्रदान करता है? और मूसा की कहानी हमें एक बहुत ही ईमानदार विरोधाभास देती है क्योंकि अगर हम वास्तव में अपने साथ ईमानदार हैं, तो हम में से अधिकांश मूसा की तरह बनना चाहते हैं, लेकिन केवल महल में।

हम महल में मूसा की तरह बनना चाहते हैं क्योंकि अगर आप सोचते हैं, "अगर मेरे पास महल होता, महल में, तो मूसा के पास सारी शक्ति होती। उनके शब्द हजारों दासों की आज्ञाएँ थीं। उसके पास सभी संसाधन थे। उसके पास वह सारा पैसा था जो वह कभी भी करना चाहता था जो उसे करने की जरूरत थी। उनके पास पूरा पद था। उनका पूरा प्रभाव था। हम मिस्र के महल में मूसा को देखते हैं, जिसे उस समय दर्शन हुआ था, "इस्राएलियों को मुक्त करो।" और हम कहते हैं, "अगर मेरे पास सिर्फ शक्ति, अधिकार और संसाधन होते, अगर मेरे पास वह होता, तो मैं परमेश्वर द्वारा मुझे दिए गए दर्शन को पूरा कर सकता था।" लेकिन मूसा की कहानी को देखें और आपको पता चलता है कि महल में मूसा असफल रहा।

सारी शक्ति और सारे पैसे, सारे संसाधनों के साथ, उन्होंने वहीं कोशिश की। उसने सिर्फ एक इस्राएली को बचाने की कोशिश की और वह असफल रहा। और परमेश्वर हमें परमेश्वर के प्रदान करने के तरीके के बारे में अपनी सोच में यह बदलाव करने के लिए कह रहे हैं।

मूसा को महल से प्रतिज्ञात भूमि पर जाना पड़ा जहाँ परमेश्वर का अंतिम दर्शन पूरा हुआ। हमें महल से वादा की गई भूमि पर जाना है। हमें इससे बाहर निकलना होगा, "अगर मुझे सिर्फ अधिकार, शक्ति, पैसा मिल सकता है, तो मैं वह दर्शन करूँगा जो परमेश्वर ने मुझे करने के लिए दिया है।"

हमारा विचार गलत है। मूसा के पास गलत विचार था, इसलिए परमेश्वर ने उसे एक प्रक्रिया के माध्यम से नेतृत्व किया। उन्होंने उसे एक मार्ग के माध्यम से नेतृत्व किया जो हमारे लिए निर्गमन अध्याय 3 में दर्ज है जिससे हम अगुवाओं के रूप में सीखते हैं। यहाँ बताया गया है कि परमेश्वर का प्रावधान कैसे आता है और यहाँ हमारे लिए खुद को स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह निर्गमन अध्याय 3 में शुरू होता है। जैसा कि आप कहानी जानते हैं, मूसा जंगल में चला जाता है। वह एक पूर्ण विफलता की तरह महसूस करता है। अब उसके पास कुछ नहीं है।

और फिर भी परमेश्वर ने उन्हें एक दर्शनदी है और परमेश्वर अभी भी उनके साथ काम कर रहे हैं और परमेश्वर निर्गमन अध्याय 3 पद 11 में मूसा का सामना करता है और उसके पास आता है और कहता है, "मैं चाहता हूँ कि तुम दर्शन को पूरा करो।" और यहाँ मूसा कैसे प्रतिक्रिया देता है। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूँ कि फिरौन के पास जाकर इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाऊँ? और परमेश्वर ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

मूसा समझ में आता है, "मैंने कोशिश की और मैं असफल रहा। ऐसा करने वाला मैं कौन होता हूँ? और कभी-कभी आपके और मेरे मन में एक ही विचार आता है। "मैं ऐसा करने वाला कौन हूँ? मैंने कोशिश की। शायद मैं असफल रहा। " हम देखते हैं कि परमेश्वर ने हमें क्या करने के लिए कहा है और यह हमारी क्षमता से परे है। और पहला संसाधन जो परमेश्वर मूसा को देते हैं, जो सबसे महत्वपूर्ण है, वह उनकी उपस्थिति का संसाधन है। परमेश्वर ने मूसा को प्रोत्साहित करने की कोशिश नहीं की। परमेश्वर मूसा के आत्मसम्मान का निर्माण करने की कोशिश नहीं करता है। वह उनसे ये एक वाक्यांश कहता है, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।" बहुत बार, हम प्राकृतिक प्रावधान की तलाश कर रहे हैं जो हम यहाँ से शुरू नहीं करते हैं। परमेश्वर ने मुझे जो दर्शनदी है, उसे पूरा करने के लिए मुझे सबसे महत्वपूर्ण संसाधन उनकी उपस्थिति है। और जब मेरे पास उनकी उपस्थिति होगी, तो बाकी सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। यह हमारी स्थिति, हमारी मानसिकता और हमारे विश्वास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है जब हम उन संसाधनों पर विश्वास करते हैं जिनकी हमें आवश्यकता होती है। पहली बात यह है कि हमें उनकी और उनकी उपस्थिति की आवश्यकता है। लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। परमेश्वर और मूसा एक तरह से इस तरह की बातचीत कर रहे हैं। मूसा आयत 13 में फिर से परमेश्वर के पास वापस आता है और उसने विरोध किया, "अगर मैं इस्राएल के लोगों के पास जाऊँगा और उन्हें बताऊँगा, कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तो वे मुझसे पूछेंगे, उसका नाम क्या है? फिर मैं उन्हें क्या बताऊँ? और परमेश्वर ने मूसा को उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जो मैं हूँ। इस्राएल के लोगों से यह कहो, "मुझे तुम्हारे पास भेजा गया है।"

मूसा अब अधिकार का सवाल उठाता है। मुझे अधिकार के संसाधन की आवश्यकता है। अगर मैं इस्राएलियों के पास जाता हूँ, तो मेरे पास उनके साथ कोई अधिकार नहीं है। मैं पहले भी असफल रहा हूँ। मैं अब महल में नहीं हूँ। मेरे पास कोई अधिकार नहीं है। मैं क्या करूँ? और परमेश्वर बहुत स्पष्ट रूप से जवाब देते हैं, "आप कहते हैं, मैं जो हूँ वही हूँ जिसने आपको भेजा है। तुम्हें एक अधिकार इसलिए दिया गया है क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ। और यह प्रावधान का दूसरा स्तर है जो हमारे पास आता है। यह सिर्फ उनकी उपस्थिति नहीं है, बल्कि एक अधिकार है जो वह हमें आध्यात्मिक रूप से देता है जिसे हम ले जाते हैं, इस नाम पर लेबल किया गया है, "मैं हूँ", जो एक बहुत ही असामान्य नाम है। लेकिन ईमानदारी से, "मैं हूँ" नाम, यह परमेश्वर के संसाधन के बारे में हमारे हर सवाल का जवाब देता है।

हे परमेश्वर इन बिलों का भुगतान कौन करेगा?

"मैं"। परमेश्वर जब मैं आपकी सेवा में व्यस्त हूँ, तो मेरे परिवार की देखभाल कौन करेगा?

"मैं"।

आपके पास संसाधन के बारे में हर सवाल है,

हे परमेश्वर मुझे सही लोग कैसे मिलेंगे?

"मैं"। वह "मैं हूँ" के साथ जवाब देता है। वह तुम्हारे साथ है। वह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से आपका संसाधन है। और यही वह मूसा को सिखा रहा है। मूसा को भोजन की आवश्यकता होगी। मूसा को पानी की जरूरत पड़ेगी। मूसा को नेतृत्व की आवश्यकता होगी। इनमें से कुछ भी तब तक नहीं आता जब तक मूसा यह नहीं समझता, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, और मैं ही ईश्वर हूँ" बातचीत अभी भी निर्गमन 4, आयत 1 में जारी है। मूसा ने उत्तर दिया, "क्या होगा यदि वे मुझ पर विश्वास न करें या मेरी बात न सुनें और कहें," यही तुम्हें दिखाई न दिया?" तब प्रभु ने उससे पूछा, "यह तेरे हाथ में क्या है? एक लाठी से उसने जवाब दिया, और प्रभु ने कहा, "इसे जमीन पर फेंक दो।" तो मूसा लाठी लेता है और वह उसे जमीन पर फेंक देता है, और आप कहानी जानते हैं। वह सांप में बदल जाता है।

परमेश्वर मूल रूप से कह रहे हैं, "मूसा, मैं तुम्हारी हर जरूरत का ध्यान रखूँगा। बस अपने हाथ में जो है उसका उपयोग करें। तुम्हारे हाथ में क्या है? और मूसा एक छड़ी कहता है, और परमेश्वर कहते हैं, "इतना ही काफी है। यह काम करेगा।" जब आप मूसा की कहानी पढ़ते हैं, तो आपको पता चलता है कि उसने उस छड़ी को नीचे फेंक दिया, और वह सांप में बदल गई, और उसने अन्य सभी सांपों को खा लिया।

उन्होंने उस छड़ी को लिया, उसे पानी के ऊपर रख दिया, और पानी अलग हो गया, और वे स्वतंत्रता में चले गए।

जब संसाधन के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने की बात आती है, तो परमेश्वर यह कहने से शुरू नहीं करते हैं, "वहाँ देखो, और आप क्या चाहते हैं?" वह यह कहते हुए शुरू करता है, "तुम्हारे हाथ में क्या है? जो आपके हाथ में है, उससे शुरुआत करें।" "ओह, तुम्हारे पास कुछ रोटी और कुछ मछलियाँ हैं? ठीक है, वहाँ से शुरू करो।" इतना ही काफी है।

परमेश्वर ने आपको शुरुआत करने के लिए जो कुछ भी दिया है, वही काफी है। क्योंकि कई बार सेवकाई में क्या होता है जब हमारे पास महान दर्शन होती है, जो शानदार है, हमें उस दर्शन के लिए महान समर्थक दर्शन की आवश्यकता होती है, और हम तब तक लकवाग्रस्त हो जाते हैं जब तक मुझे वह बड़ी राशि नहीं मिलती, जब तक मुझे सही प्रकार के अगुवा नहीं मिलते, और हम कभी भी विश्वास का पहला कदम नहीं उठाते। तो यीशु कहते हैं, "सुनो, जो मैंने तुम्हें पहले ही दे दिया है उस पर एक नज़र डालो, उस पर ध्यान केंद्रित करो जो तुम्हारे पास पहले से है, न कि उस पर जो तुम्हारे पास नहीं है, और जो तुम्हारे पास है उसे शुरू करने दो उस दर्शन को पूरा करने पर जो मैंने तुम्हें दी है। फिर आप देखेंगे कि आपके पास अतिरिक्त संसाधन आने लगेंगे। मूसा फिर से परमेश्वर के पास वापस आता है, और वह अपनी सीमाओं को देखता है, लेकिन मैं हकलाता हूँ। मैं बोल नहीं सकता। और निर्गमन 4 की आयत 14 में,

परमेश्वर कहते हैं, "हारून आपसे मिलने जा रहा है, और हम आपको देखकर खुश होंगे।" वह कह रहा है, "मूसा, मैं तुम्हें लोगों का भरण-पोषण करने जा रहा हूँ। यह काम आपको अकेले नहीं करना है। कभी-कभी सेवकाई में, विशेष रूप से अगुवाओं के रूप में, हम खुद को अकेला महसूस करते हैं, और हम उसका बोझ उठाते हैं। और जब हम परमेश्वर के संसाधन के बारे में सोचते हैं, तो हम आम तौर पर लोगों के संदर्भ में नहीं, बल्कि कार्यक्रम या वित्त या भवनों के संदर्भ में सोचते हैं।

और फिर, प्राथमिकता? परमेश्वर कहते हैं, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें अपना अधिकार दूँगा, और मैं आपको लोग दूँगा। परमेश्वर ने मूसा से भोजन या पानी या रसद के बारे में कुछ नहीं कहा है। उन्होंने अपने और लोगों के बारे में

बात की है। "हारून, तुझे देखकर कौन खुश होगा? जब हमें आवश्यक संसाधनों की बात आती है तो अगुवाओं के रूप में हमारे लिए बाइबल में सबसे महत्वपूर्ण छंदों में से एक है, "प्रभु से फसल की प्रार्थना करें कि वह श्रमिकों को भेजे।"

और आप अपने हारून के लिए प्रार्थना करते हैं, और परमेश्वर उसे बचाता है? हम अक्सर सोचते हैं, "वाह, अगर मैं सिर्फ महल में होता, तो मेरे पास सभी नौकर, सभी गुलाम, सभी पैसे, सभी अधिकार होते। यही मैं चाहता हूँ।" और अगर आप ईमानदार हैं, जैसा कि आप मेरी बात सुन रहे हैं, तो आप जानते हैं कि कभी-कभी आप उस मानसिकता में आ जाते हैं। और उनकी दर्शनके लिए परमेश्वर का प्रावधान आपके लिए लाखों डॉलर खोलने की कोई गुप्त कुंजी नहीं है।

यह मूसा के मॉडल के माध्यम से अपनी मानसिकता और अपने विश्वास को बदलने के बारे में है, और कहता है, "नहीं, मैं महल और प्राकृतिक परिस्थितियों पर भरोसा नहीं करने जा रहा हूँ। मैं क्रॉसवे से होकर जा रहा हूँ, और मैं प्रॉमिस्ट लैंड तक पहुँचने जा रहा हूँ। और मुझे जो प्रावधान चाहिए वह यह है, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।" मुझे किसी भी चीज़ से अधिक जिस प्रावधान की आवश्यकता है, वह यह है कि परमेश्वर कह रहे हैं, "मैं आपको अपना अधिकार दे रहा हूँ।"

मुझे किसी भी चीज़ से अधिक एक हारून की आवश्यकता है जो मेरे साथ ले जाएगा। मूसा बदल गया। कहानी इसे बहुत स्पष्ट रूप से दर्ज करती है। वह महल में गया और शुरू किया, लेकिन इस रास्ते से, वह परमेश्वर के संसाधन पर ऐसी निर्भरता के स्थान पर पहुंच गया। यह वास्तव में हमारे लिए निर्गमन अध्याय 33 में चित्रित किया गया है, जहाँ मूसा स्वयं परिवर्तित हो गया है। आयत 15 में, यहाँ मूसा परमेश्वर से क्या कहता है, "यदि आपकी उपस्थिति हमारे साथ नहीं जाती है, तो हमें यहाँ से न भेजें। जब तक आप हमारे साथ नहीं जाते, किसी को कैसे पता चलेगा कि आप मुझसे और अपने लोगों से खुश हैं? मुझे और आपके लोगों को अन्य सभी लोगों से और क्या अलग करेगा।"

तब यहोवा ने मूसा से कहा, जो कुछ तू ने चाहा है, मैं वैसा ही करूँगा, क्योंकि मैं तुझ से प्रसन्न हूँ और तुझे अपने नाम से जानता हूँ। मूसा परिवर्तित हो गया था। वह महल से निकला, "मुझे यह परमेश्वर के लिए करना है। मुझे संसाधनों की आवश्यकता है। अगर परमेश्वर मेरे साथ नहीं हैं, तो मैं ऐसा करना भी नहीं चाहता, क्योंकि लोग परमेश्वर को कैसे देखेंगे? मूसा जानता था कि उसकी पहचान अब केवल परमेश्वर की महिमा करने का एक प्रतिबिंब थी। "मुझे पता है कि आपके पास एक महान दर्शन है, और मुझे पता है कि उस दर्शनके लिए संसाधनों की आवश्यकता है।"

सुनिश्चित करें कि आप महल में हाथापाई के प्रलोभन में न पड़ें, बल्कि अपने आप को मूसा की तरह यीशु के चरणों में रखें। और विश्वास करें और जान लें कि आपका जीवन और आपकी सेवकाई उसे महिमा देने के लिए है, इसलिए परमेश्वर इसे कुछ अनूठे तरीकों से करने जा रहे हैं। और जो मायने रखता है वह यह है कि आपका उस ईश्वर में विश्वास है जो कहता है, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।" जो आपके हाथ में है उसे लें और दर्शनको पूरा करना शुरू करें, और मुझे सही समय पर चरण-दर-चरण शेष लाते हुए देखें जहाँ परमेश्वर को महिमा मिलती है।